

चैलक m. N. pr. eines Mannes Çat. Br. 10, 4, 5, 3. — Vgl. चैलकि.
 चेलगङ्गा (चेल + गङ्गा) f. N. pr. eines Flusses HARIV. 7736. 8493.
 चेलान m. eine Gurkenart (फललताविशेष, = अल्पप्रमाणक, vulg. चेलाना) RATNAM. im ÇKDr. — Vgl. चेलाल.

चेलाल m. eine Gurkenart, Cucumis sativus L., TRIK. 2, 4, 36.
 चेलालक (चेल + अलक) m. Kleidermotte GOVINDAR. bei KULL. zu M. 12, 72. — Vgl. चेलालक.

चेलिका (von चेल) f. eine best. Frauenkleidung: सेयं कृत्स्नस्य वनिता पीतशालीपरिच्छा । रक्तचेलिकाच्छन्ना शातकुम्भघनस्तनी ॥ PĀTĀLAKHAṆ-
 DA im PĀDMA-P. ÇKDr. — Vgl. गन्ध०.

चेलिचीम s. u. चिलिचिम; WILSON führt auch eine Form चेलीम auf.
 चेलिन् s. चरुचेलिन्.

चेलुक m. ein buddh. Noviz (s. ग्रामणोर) TRIK. 1, 1, 24. — Vgl. चैलक.
 चेल्व. चैल्वति v. l. für चेल्व DHĀTUP. 13, 29.

चेली f. Bez. einer Rāgini HALĀJ. im ÇKDr.

चेष्ट, चैष्टि und चेष्टे DHĀTUP. 8, 3 (kennt bloss das med.), perf.
 चेष्टुम् (s. u. वि). 1) die Glieder bewegen, zappeln: गङ्गायां हि न शक्नोमि वृक्षश्चेष्टुम् (spricht ein Fisch) MATSJO. 22. तूष्णींभूत उपासीत न चेष्टन्मनसापि च MBu. 5, 1679. आस्ते शेते चेष्टे ऽवोत्पद्यते परिधावति BHĀG. P. 5, 26, 14. कुब्जाः केन कृताः सर्वाश्चेष्टयो नाभिभाष्य R. 1, 34, 25. ते तं ममर्दुः सक्तुः चेष्टमानं महीतले MBu. 3, 2542. LA. 96, 14. R. 1, 2, 14. 2, 63, 46. 63, 23. 3, 33, 30. ÇĀK. 154. BHĀG. P. 3, 1, 32. — 2) in Bewegung sein, sich rühren, geschäftig sein, sich Mühe geben: यत्र वा अर्क्षन्नागच्छति सर्वगत्वा इव वै तत्र चेष्टति ÇAT. Br. 3, 4, 4, 6. यो अस्य विश्वन्मन इति विश्वस्य चेष्टतः AV. 9, 4, 23, 24. KAUC. 80. यत्र वाधयुक्कृचौ चेष्टताम् LĀTJ. 4, 11, 3, 5. यदा स देवो जागर्ति तदेदं चेष्टते (Gegens. निमीलति) जगत् M. 1, 32. अचेतनं जीवगुणं वदति स चेष्टते चेष्टयते च सर्वम् MBu. 3, 13981. न चावतारयामास (गङ्गाम्) चेष्टमानो यथावत् 9917. यथाशक्ति यथोत्साहं युद्धे चेष्टति तावकाः 6, 3642. — 3) sich mit Etwas abgeben, betreiben, treiben, thun, handeln: अग्रान्यश्चेष्टुः GOBU. 1, 6, 19. एतद्गृहस्थधर्मं तु चेष्टमानः MBu. 13, 4676. आगमप्रतिकारश्च वानरैरत्र चेष्टितः R. 4, 47, 17. सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्जीनवानपि BHĀG. 3, 33. धिया भाग्यानुगामिन्या चेष्टमानो नयोचितम् RĀGA-TAR. 3, 493. धर्मारण्यचरेषु केनचिदुत प्राणिषसञ्चेष्टितम् ÇĀK. 106. असम्यक्चेष्टितं मया ÇĀK. Cu. 63, 45. zurichten: स्थालीपाकावृत्तायं चेष्टित्वा ÇAT. Br. 14, 9, 4, 18. — 4) besuchen: रुरुचोष्टतभूमिषु RAGH. 9, 31. — caus. चेष्टयति und ०ते, aor. अचिचेष्टत् und अचचेष्टत् P. 7, 4, 96. VOP. 18, 2. beweglich machen: संधी-
 न्स्तब्धाश्चेष्टयेत् SUÇR. 2, 183, 12. in Bewegung setzen, treiben: पवित्राण्यवधाय चेष्टयते ÇĀK. ÇR. 8, 9, 3. MBu. 3, 13981 (s. oben u. 2). यश्चेष्टयति भूतानि तस्मै वाय्वात्मने नमः 12, 1654. 6845. M. 12, 15. दैवं चेष्टयतीव च MBu. 7, 6018. दैवं चेष्टयते सर्वम् R. 6, 94, 24. योद्धुमचिचेष्टश्च राघवौ BHĀTJ. 13, 60. — चेष्टित n. s. bes.

— अति sich zu sehr anstrengen: वृत्त्यर्थं नातिचेष्टेत HIT. I, 170.

— आ Etwas unternehmen, thun: तथा मयापि संज्ञयैव किमपि चतुरमाचेष्टितम् DAÇAK. in BENF. Chr. 197, 1.

— परि sich herunwölzen: महीतले । पांशुवृषितसर्वाङ्गी रुदती पर्यचेष्टत R. 4, 19, 32.

— वि 1) die Glieder hinundherbewegen, sich rühren, sich krümmen.

sich sträuben: यैः (धातुभिः) शरीरं विचेष्टते MBu. 12, 6839. अविचेष्टन-
 तिष्ठत् 13, 2304. मद्रयानं विचेष्टते R. 3, 34, 10. पुरुषस्य विचेष्टतः BHĀG. P. 2, 10, 15. उद्वेष्टति विचेष्टति संवेष्टति च सर्वशः । वेगं कुर्वति संवेष्टा निकृताः परमेयुभिः ॥ MBu. 7, 3168. तत एनं विचेष्टतं वद्धा DRAUP. 9, 3. MBu. 3, 1609. HARIV. 600. धरायां स्म व्यचेष्टतो भग्नप्रज्ञाविवर्पणौ R. 2, 77, 20. निपीडशिरोग्रीवा व्यचेष्टत भुङ्गमाः 5, 34, 17. भुङ्गा धरायां पतितौ नृपस्य तौ विचेष्टतुस्तार्क्षताविवर्गौ MBu. 8, 816. विचेष्टमान HARIV. 9928. ज्वालावलीढवदनैः सर्पभोगैर्विचेष्टितः (प्राग्युग्मिः) 10200. — 2) sich abplacken, sich abmühen: व्यचेष्टत निरानन्दा राघवस्य वरस्त्रियः R. 2, 66, 21. अनाद्यवद्विचेष्टमानः SUÇR. 1, 1, 10. — 3) thätig sein, handeln; zu Werke gehen, verfahren, sich benehmen: त्वं प्रभुस्त्वं विभुश्च त्वं भूतात्मा त्वं विचेष्टसे MBu. 3, 517. मयाभिभूतविज्ञाना विचेष्टते न कामतः 12972. नटस्याकृतिभिर्विचेष्टतः BHĀG. P. 8, 3, 6. वृद्धत्रयो ऽसि चाण्डाल बालवच्च विचेष्टसे MBu. 13, 4815. येन येन यथाङ्गेन स्तेनो नृषु विचेष्टते verfahren gegen M. 8, 334. bewirken: स्वकर्मसंतानविचेष्टित HIT. I, 201. — विचेष्टित n. s. bes.

— सम् 1) unruhig werden: सिंहस्येव गन्धमाघाय गावः संवेष्टते शत्रवो ऽस्माद्विषाये MBu. 5, 1855. 7, 3168 (vgl. u. वि). — 2) zu Werke gehen, verfahren: तत्र संवेष्टमानस्य लतयती विचेष्टितम् MBu. 3, 2923.

चेष्ट (von चेष्ट्) 1) n. a) Bewegung (eines Gliedes, des Körpers), Ge-
 bärde: इङ्गिताकारचेष्टम् M. 7, 62. — b) das Thun und Treiben: एवमा-
 दीनि चान्यानि विज्ञोश्चेष्टानि HARIV. 5939. — 2) f. आ a) = चेष्ट a P. 2, 3, 12. VOP. 3, 19. JĀG. 2, 220. 3, 76. MBu. 12, 682. R. 2, 63, 13. SUÇR. 1, 6, 10. 69, 9. चेष्टोपरम् 97, 10. 130, 21. चेष्टास्तम्भ 252, 20. 313, 3. संरु-
 द्धचेष्ट RAGH. 2, 43. im Gegens. zu मनोवृत्ति ÇĀK. 16, 12. चेष्टा नृत्तमयी तत्र KATHIS. 23, 84. आकारैरिङ्गितैर्गत्या चेष्टया M. 8, 26. 7, 67. — b) thätiges Verhalten, Handlung, = क्रिया AK. 3, 4, 24, 159. युक्तचेष्ट ÇYETĀCY. UP. 2, 9. युक्तचेष्टस्य कर्मसु BHĀG. 6, 17. (सिद्धये सर्वकर्मणाम्) विवि-
 धाश्च पृथक्चेष्टाः 18, 14. न कुर्वति वृथा चेष्टाम् M. 4, 63. DHĀRTAS. 72, 12. सो ऽनुप्राविष्टो भगवांश्चेष्टावृत्तेण तं गणम् BHĀG. P. 3, 6, 3. — c) das Vollbringen, Thun: रात्रिः स्वप्राय भूतानां चेष्टायै कर्मणामकः M. 1, 65. — d) das Thun und Treiben, das Benehmen, Art und Weise zu sein: कर्मवैचि-
 त्रात्प्रधानचेष्टा गर्भदासवत् KAP. 3, 51. चेष्टाश्चैव विज्ञानीपादरोन्यो-
 धयतामपि M. 7, 194. केयं तव चेष्टा VID. 267. उन्मत्तचेष्ट adj. 178. कामारो दर्शयश्चेष्टाम् BHĀG. P. 3, 2, 28. क्रूरचेष्ट adj. VARĀN. BRH. S. 9, 12. चेष्टा पिपीलिकानाम् MĀRK. P. 27, 18. अग्निविस्फालिङ्गानां वीजचे-
 ष्टा च शात्मलेः 19. प्रङ्गारचेष्टाः RAGH. 6, 12. यस्य गृहस्यैतादृशी चेष्टा तत्र सेवकेन कथं स्यात्तव्यम् HIT. 110, 22. — Vgl. कर्मचेष्टा, अचेष्टता, निश्चेष्ट.
 चेष्टक (wie eben) m. eine Art coitus: पादमेकं हृदि न्यस्य इतरेणैव चे-
 ष्टयेत् । कातः क्रेडि स्थिता नारी बन्धो ऽयं चेष्टको मतः ॥ SMARADĪPIKĀ
 im ÇKDr.

चेष्टन (wie eben) n. 1) Bewegung: चेष्टनस्पर्शने M. 12, 120. नेष्टः काण्डू-
 यने ऽङ्गानामासनेत्यनचेष्टने BHĀG. P. 3, 31, 26. पुरुषाः श्येनचेष्टनाः MBu. 12, 6363. सपत्नस्येव चेष्टने R. 5, 83, 12. — 2) das Vollbringen, Thun: त-
 त्प्रतीकारः KAP. 1, 3.

चेष्टयितृ (vom caus. von चेष्ट्) nom. ag. der in Bewegung setzt MBu. 12, 1181.

चेष्टानाश (चेष्टा + नाश) m. das Aufhören aller Bewegung, aller Thä-